साधो भाई चीन्हो सब्द

साधो भाई चीन्हो सब्द कोई चीन्हो
ऐसो उत्तम आकार तोकों दीन्हों, जिन प्रगट प्रकास जो कीन्हों।।

मानखें देह अखण्ड फल पाइए, सो क्यों पाए के वृथा गमाइए।
ए तो अधखिन को अवसर, सो गमावत मांझ नींदर।।

सास्त्र ले चले सतगुर सोई, बानी सकल को एक अर्थ होई।
सब स्यानों की एक मत पाई, पर अजान देखे रे जुदाई।।

सास्त्रों में सबे सुध पाइए, पर सतगुर बिना क्यों लखाइए।
सब सास्त्र सब्द सीधा कहे, पर ज्यों मेर तिनके आड़े रहे।।

यामें बड़ी मत को लीजे सार, सतगुर याहीं देखावें पार।
इतहीं बैकुंठ इतहीं सुन्य, इतहीं प्रगट पूरन पारब्रह्म।।

ए बानी गरजत मांझ संसार, खोजी खोज मिटावे अंधार।
मूढ़मती न जाने विचार, महामत कहें पुकार पुकार।।